रात्रि क्लास 26/9/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

बच्चे अपनी कमाई कर रहे हैं। बच्चे स्वदर्शनचक्रधारी(ी) बन बैठे हुए हैं। स्व आत्मा को अपने बाप का ज्ञान हुआ और सृष्टि चक्र का भी ज्ञान बाप से मिला। यह है मूल गुप्त बात। खुशी भी गुप्त है। ताकत भी गुप्त मिल रही है बेहद के बाप से। जिस बल से तुम विश्व पर जीत पहनते हो। बाप समझाते हैं यह तो कल्प2 जीत पहनते हैं। भारत का प्राचीन राजयोगबल गाया हुआ है। योग याद में ही बल है। जितना याद करते रहते हैं उतना कट निकलती रहती है। याद से ही कट उतरेगी। ज्ञान तो बिल्कुल ही सहज है। बच्चे समझ गये हैं हम सतोप्रधान से सतो रजो तमो में आये हैं फिर सतोप्रधान बनना है जितना जो याद करते हैं और समझते हैं हम निरन्तर याद में रहते हैं उनको समझना चाहिए हम ऊँच पद पावेंगे। हमारा कट उतर रहा है। यही सब कहते रहते हैं। बाप को याद करो तो तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। आत्मा को सतोप्रधान बनने का और कोई उपाय ही नहीं। बाप बैठ बच्चों को देखते हैं तो कशिश होती है। बाप शान्ति का सागर, ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर है। बच्चों का बोल–चाल भी बड़ा ही रॉयल होना चाहिए। तुम बच्चे धन देते हो ना। यह ..... रत्न है। बड़ी भारी कमाई है। तुम्हारे मुख से रत्न ही निकलते हैं। जिससे कोई को दुख हो ऐसी कुछ मुख से नहीं निकलना चाहिए। कोई से भी बोलो बड़ा मीठा। बाबा शिव बाबा को याद करो तो पाप कट जावेंगे और तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। घर में भी याद चाहिए। हंगामा कोई नहीं ऐसा कोई न समझे इसमें ज्ञान कहाँ। ज्ञानवान बड़े रसीले, मीठे होते हैं। (कुमारियों ने एक ड्रामा दिखाया। सुख–शान्ति, पवित्रता और धर्म का)

सतयुग में सुख अपार है। कलियुग में दुख अपार है। भगवानुवाच समझाते हैं काम पर जीत पहन जगतजीत ऐसे बन सकते हैं; परन्तु विकारों पर जीत पहनते ही नहीं। ऐसी2 छोटी2 बच्चियाँ बैठ समझायें तो कुछ असर पड़े; क्योंकि यह छोटी बच्चियाँ महात्माएँ हैं। उन महात्माओं से यह ऊँच है। सुखधाम को 5000 वर्ष हुए। फिर कैसे सीढ़ी उतरे। यह छोटी2 बच्चियाँ हड्डी समझावें। मुँझे नहीं। यह शर्माय भी सकते हैं समझाकर। जबकि भगवान कहते हैं प्रतिज्ञा करो, राखी बांधो। पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया के मालिक बनेंगे। यह तो महात्मा है ना। ऐसे बच्चियों को अच्छी तरह से खड़ा करना चाहिए। जो बैठ समझावें अभी मौत समाने खड़ा है। बाप कहते हैं जन्म–जन्मान्तर के पाप कैसे कटेंगे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। और कोई उपाय नहीं। यह मुख्य बातें हैं इसलिए बाप कहते हैं मुख्य2 बातों का ओपीनियन चाहिए। बाप कैसे सर्वव्यापी हो सकता। बाप से तो हम कैसे वरसा ले रहे हैं। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। गंगा कोई पतित पावन नहीं। यह तो भक्त लोग घोर अंधियारे में हैं। ऐसी–2 प्वाइंट्स छोटे2 बच्चे को सिखाओ। ऐसी–2 6/7 बच्चियाँ निकलें वह कितना भी सबको ठोके तुम तो वैश्यालय के बन गये हो। भारत शिवालय था। शिवालय भारत की बहुत महिमा करनी चाहिए। अभी इन गंदों ने भारत का नाम बदनाम कर दिया है। ऐसी–2 छोटी–2 बच्चियाँ समझायें तो नाम भी हो। हड्डी अन्दर समझे कि बरोबर सत्य कहते हैं तब कुछ असर पड़े। बाप गरीब निवाज़ है। यह एम0एल0ए0 आदि जो कांग्रेस कहलाते हैं वास्तव में इनका नाम कौरव है। बाप को सर्वव्यापी मान ठिक्कर–भित्तर में कह दिया है। गरीब झट समझ जाते हैं। बाप भी कहते हैं मैं गरीब निवाज हूँ। बाकी तो सन्यासी आदि सभी गाली देते हैं। परमात्मा सर्वव्यापी है कुत्ते–बिल्ले सब में है। तो बच्चों को हड्डी समझाये तैयार करना चाहिए। तो फिर कुछ असर पड़ सकता है। तुम कहते हो तो गुस्सा लगता है। इनका जैसे वखमल का पादर हो जावेगा। अगर अच्छी रीत समझाया जाये तो। जैसे बाप समझाते हैं सन्यासी घर बार छोड़ते हैं, स्त्री को विधवा आरफन बना देते हैं। वह पवित्र बनते हैं वह तो अच्छा है। अभी तमोप्रधान बुद्धि होने से अन्दर घुस पड़े हैं। ऐसी2 बातें यह कुमारियाँ समझावें। इन पर मेहनत करना अच्छा है। औरों को भी शर्म आवेगा। शान्ति से धैर्य से बैठ समझावें। यह तो कॉमन बात हो जाती है। अच्छी2 फर्त बच्चियाँ निकलें। कॉलेज आदि में भी न जाने वाली। आजकल कालेजों में भी क्या रखा है। कहाँ भी जाने लायक ही नहीं।

बच्चों की अवस्था तो बहुत अच्छी होनी चाहिए। इस पुरानी दुनिया छी छी दुनिया से वैराग्य दिलाना है; क्योंकि बाप से वरसा ले लेंगे। माया भी बड़ी जबरदस्त है। एकदम बेताला कर देती है। कम नहीं है। बॉकसिंग है ना। काम की चमाट बड़ी जोर से माया लगाती है। चोट बड़ी जोर से खाते हैं। हार खाते हैं। इसमें खुश न होना चाहिए फिर हार खाने। पद भ्रष्ट हो जावेगा। बच्चे बहुत2 मीठे होने चाहिए। उल्टा सुल्टा ज्ञान होने से फिर पत गंवा देते हैं। काम काज करते शिवबाबा को याद करना है। बड़ा प्रेम से समझाना है। बाप कहते हैं तुम हो आत्मा; परन्तु तुम नीचे गिर गये हो। सुल्टा से उल्टा बन गये हो। तो बाप आकर उल्टा से सुल्टा बनाते हैं। तुम विश्व के मालिक बन जाते हो। बाप देह–अभिमान से देही–अभिमानी बनाते हैं। हम आत्मा हैं। यह अभ्यास डालना अच्छा है। यह समझ की बात है। लिखने वा कहने की भी नहीं। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ बैठो और बाप को याद करो तो पाप कट जाये। गीता बाप ने गाई न कृष्ण ने। परमात्मा सर्वव्यापी नहीं है। विश्व का वरसा देने वाला है। ऐसी2 मुख बातें बड़े2 अक्षरों में लिखे हुए होनी चाहिए। एकजभूल है। जानते भी हैं भगवान निराकार एक ही है। फिर भी साका..... लेने वाले का नाम ठोक दिया है। इनमें ही तुम्हारी ..... युग संगमयुग राइटियस, वह कलियुग अनराइटियस। धीरे2 ताला तो खुलना ही है। बाप कितना स्वीट लगता है। उन जैसे स्वीट वस्तु कोई है नहीं। तो फिर ऐसा स्वीट बनना चाहिए ना। बाप जैसा स्वीट और कोई है नहीं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।